''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–07 वर्ष–01, अक्टूबर 2019 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

सभी देशवासियों को ''दीपावली'' की हार्दिक शुभकामनाएं

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-07 वर्ष-01, संवत्सर 2076 अक्टूबर 2019 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता | पृष्ठ संख्या

वेदवाणी........03
सम्पादकीय........04-05
व्यक्ति निर्माण के उपयुक्त माध्यम........06-07
कवि की कलम से........08
ईश्वर को हमारे माल व माला की जरूरत नहीं........09-10
मां की सीख ने बनाया महापुष........11
स्वास्थ्य चर्चा........12
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां........13-15
विज्ञापन........16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

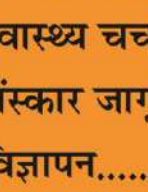

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

करूणासागर! द्वेष ज्वाला बुझा दें

वेद मंत्र

ओ३म् प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः।।

-ऋ० १०। १८७। १ :, अथर्व० ६। ३४। १

ऋषिः-**वत्स आग्नेयः**।। देवता-**अग्निः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

विनय

हे मुनष्य! क्या तू चाहता है कि अब तू द्वेष से पार हो जाए? क्या तू अपने मुनष्य भाइयों से द्वेष कर-करके और बदले में उनके द्वेष को पा-पाकर तंग आ चुका है? तूने अपने सुख में बाधक समझ न जाने कितनों से द्वेष किया है, पर जितना ही तूने उनसे द्वेष किया है- वैर का बदला वैर से दिया है- क्या उतना ही वह द्वेष बढ़ता ही नहीं गया है? ओह! इस बदले की, प्रतिद्वेष की प्रक्रिया से द्वेष इतना बढ़ता गया कि तू आज अपने ही बनाये एक द्वेष-सागर में घिर गया है। यदि तू अब पूरा व्याकुल हो चुका है और चाहता है इस द्वेष-चक्र से पार हो जाए तो उठ और जगत् में व्यापक अपने उस अग्निदेव तक अपनी वाणी को पहुंचा, जो सब मनुष्यों की कामनाओं को पूरा करने वाला है। अरे, वह तो 'वृषभ' है, हम पर करूणा करके अभीष्टों को बरसा रहा है। केवल उस तक अपनी आवाज पहुंचाने की देर है कि वह तेरी कामना पूरी कर देगा। यदि तेरी यह इच्छा हार्दिक है तो निश्चय ही तेरी प्रार्थना, तेरी पुकार, वेग से, प्रकृष्टता से वहां पहुंचेगी। यदि वाणी की प्रकृष्टता से प्रेरित करने का हममें सामर्थ्य हो तो प्रार्थना की वाणी उस अग्निदेव को पहुंचकर उससे क्या नहीं करा सकती, किस कामना की पूर्ति नहीं करा सकती! हमारी कामना को पूरा करने की सामर्थ्य उसी में है- केवल उसी में है। वही हमें द्वेष सागर से पार करेगा। इसलिए तू अपने सुख में बाधक समझकर अब किसी से द्वेष न कर, किन्तु सुख के बरसानेवाले उस प्रभु से प्रार्थना कर और फिर देख कि द्वेष कहां है? प्रार्थना द्वारा उस प्रभु के सम्मुख पहुंचते ही सब द्वेष समाप्त हो जायेगा।

शब्दार्थ

क्षितीनाम्- मनुष्यों के **वृषभाय**- अभीष्टों को बरसानेवाले **अग्नये**- अग्नि स्वरूप प्रभु के लिए **वाचम्**- अपनी वाणी को **प्र ईरय**- प्रकृष्टता से प्रेरित कर। वह **नः**- हमें **द्विषः**- द्वेषों से **अति पर्षत्**- पार लगाएगां

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा आदि हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com **09719910557**

सम्पादकीय | दिपावली विशेष : ''तमसो मा ज्योतिर्गमय''

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

दीपावली पर्व शुद्ध रूप से सामाजिक एवं भौगोलिक पर्व है। इसको द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण पांडव कौरव मनाया करते थे। त्रेता युग में भगवान राम और राम के पूर्वज भी मनाया करते थे और इससे पहले भी सतयुग में भी उसको मनाया जाता था। दीपावली का वास्तविक नाम है ''शारदीय नवसस्येष्टि पर्व'' जिसका अर्थ है ''शरद ऋतु में आई हुई फसल का यज्ञ'' अर्थात् खरीफ की फसल तिलहन, दलहन, अनाज यथा धान, मक्का, चना, मसूर, जौ, उड़द, सोयाबीन, अरहर आदि का प्रेम से स्वागत करना, पूजा करना, सबसे पहले इन नई फसलों को प्राप्त करने के बाद इसे देवताओं को भोग लगाना। कैसे? यज्ञ पूर्वक। अग्नि देवताओं का मुख है। अग्नि को दी हुई आहुति सभी देवताओं को प्राप्त होती है। इससे सभी देवता प्रसन्न होते हैं और हमारा कल्याण करते हैं। हमारी संस्कृति त्याग और दान की संस्कृति है। फिर हम उस नई फसल से नए-नए पकवान खीर, हलवा, मिठाई लड्डू बताशा आदि बनाएं। अपने माता-पिता, गुरु- आचार्य, बड़े-बुजुर्ग, रिश्तेदार, असहाय, निर्बल, अनाथ, हमारे सेवक, कर्मचारी, पड़ोसी, हमारे रक्षक पुलिस, सेना को देकर यथायोग्य ग्रहण करें। सामाजिक स्तर पर कर्म के अनुसार किसान और व्यापारी इस पृथ्वी पर समृद्धि लाते हैं और अभाव को दूर करते हैं इनका कार्य ही यही है-

पशुनां रक्षणं दानं इज्योध्ययनमेव च।
वणिक् पथं कुसीदं च वैश्यस्यकृषिमेव च।।

अर्थात् पशुओं का पालन एवं रक्षण तथा दान देना, यज्ञ करना, स्वाध्याय करना इस नियमित अङ्ग और व्यापार-वस्तुओं का आयात निर्यात और पैसों का निवेश करना यह व्यापारी एवं किसान के कार्य है। परंतु किसान की उपेक्षा करके कभी किसी समाज की शुभ दीपावली नहीं होती है। लक्ष्मी का अर्थ क्या है? नोट करेंसी? नहीं। जब नोट नहीं थे तब लक्ष्मी नहीं थी क्या? थी। तब तांबे, सोने, चांदी के सिक्के चलते थे। एक समय ऐसा भी था जब सिक्के नहीं थे तब क्या लक्ष्मी नहीं थी? अवश्य थी। फिर लक्ष्मी क्या है लक्ष्मी है धान, अनाज। यही विशुद्ध रूप से लक्ष्मी है और इस लक्ष्मी को देने वाला किसान है। आइए! इस दीपावली में आसपास के गरीब किसानों का संबल बने उनके पास जायें हो सके तो उनके कर्ज को हल्का या कम करने का प्रयास करें। उनके बच्चों को मिठाई कपड़ा इत्यादि दें।

दीपावली का पर्व कैसे मनायें :-

लक्ष्मी पूजा दीपावली जो मुख्य पर्व है। इस दिन आप लोगों को दो बार यज्ञ हवन करना होगा। एक बार प्रात: काल घर में और दूसरी बार आपके प्रतिष्ठान व्यवसाय, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री आदि में। जहां पर बैठ करके आप अपना कार्य करते हैं। दीपावली से पहले ही आप अपने घर की साफ-सफाई, रंगरोगन, आदि कर लें। क्योंकि वर्षा ऋतु अभी गई है और साफ-सफाई की बड़ी आवश्यकता है। रात्रि को पवित्र मन से शयन करें। इस दिन पवित्र रहे प्रात: काल 4.00 बजे उठे प्रार्थना करें। योग प्राणायाम करें। सभी मिलकर के आनंदोत्सव से मिठाइयां पकवान बनाए घर में यज्ञ हवन करें। विद्वानों को बुलाकर के हवन करवाएं। आपकी हवन सामग्री में बताशे, धान, मूंग, मसूर, दाल जो नई फसल है उसको मिलाएं और दीपावली ''शारदीय नव सस्येष्टि'' के मंत्रों से आहुतियां दें। परिवार के कल्याण के लिए समाज के कल्याण के लिए देश के कल्याण के लिए परमात्मा से प्रार्थना करें। साथ में यह भी कहें कि पहले सुधार मेरे से शुरू होगा।

लक्ष्मी का अर्थ है जो आपके लक्ष्य की पूर्ति में आपका सबसे.......................... (शेष पेज 05 पर देखें)

पृष्ठ 04 का शेष....

सम्पादकीय : दीपावली विशेष- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

.......सहायक साधन हो, वह लक्ष्मी है। बिना शुद्ध लक्ष्य के शुद्ध लक्ष्मी भी प्राप्त नहीं होती है। इसलिए हमारा लक्ष्य भी ऊंचा और श्रेष्ठ होना चाहिए। अपने घर को सजाएं। घी के दीपक जलाएं। दिवाली वाले दिन अमावस्या तिथि होती है और यह अमावस्या १२ महीने में जो १२ अमावस्यायें आती है उसमें यह सबसे काली अमावस्या होती है। सबसे प्रगाढ अंधकार वाली अमावस्या होती है। हम चाहते हैं कि हम घी के दीपक जला करके इस अंधकार को दूर करें। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' हम अंधकार से प्रकाश की ओर चलें। हमारे मन से अंधकार मिटे, हमारे समाज से अज्ञान, अंधकार, अभाव दूर हो यही ''दीपावली'' का संदेश है। दीप का अर्थ है दीपक और अवली का अर्थ है पंक्ति, जिस पर्व में दीपक की बड़ी-बड़ी पंक्तियां लगाकर घृत के दीपक जलाते हैं उसे 'दीपावली' कहते हैं।

हमारे पूर्वजों ने हमारे पर्वों को कितना सुंदर सजाया है, कितना सामंजस्य बैठाया है। थोड़ा विचार कीजिए! गोवर्धन के साथ लक्ष्मी पूजा है दीपावली है। मैंने ऊपर कहा है कि लक्ष्मी का मतलब करेंसी नहीं है, हमारी फसल है। अब आप बताइए बिना गो माता की पूजा के 'लक्ष्मी पूजा' कैसे हो सकती है। 'गोवर्धन' अर्थात गौ माता का रक्षण पालन और संवर्धन। बिना गो माता के खेती कैसे हो सकती है? फसल अच्छी कैसे हो सकती है? विदेशी खाद फर्टिलाइजर से आप सिर्फ बीमार पड़ेंगे। परंतु शुद्ध गाय के गोबर के खाद से खेती करने पर उसका कितना लाभ होता है आप जानते हैं। इसलिए हम गौ माता की पूजा करनी चाहिए। क्योंकि हमारा पूरा समाज खेती पर निर्भर है और हमारी खेती गो माता पर निर्भर है। दूसरा पक्ष यह है कि आप दीपावली पर खूब मिठाईयां खाएंगे और बाटेंगे भी परंतु यह तो बताइए बिना दूध खोवा के मिठाइयां बनेंगी कैसे? क्या डालडा और मिलावटी मावा की मिठाई खाएंगे। तो बताओ बिना गोवर्धन पूजा के आपकी दीवाली सफल कैसे होगी। अत: गौ माता का पालन करें। आप सभी के नाम पर कम से कम एक से पांच गायें आपके पैसे से आपके निकट गोशाला में पलनी चाहिए। तभी आपकी गोवर्धन पूजा सफल है और तभी गौ माता का आशीर्वाद आप के परिवार को मिलेगा।

'भाईदूज' सामाजिक है यह पर्व अपने मातृशक्ति को सशक्त बनाने का पर्व है। बहनें, बेटियां अपने मायके आती हैं या उन्हें सम्मान सहित लेने जाते है इसदिन बहने सामाजिक रिवाज के अनुसार भाई को उबटन लगाकर स्नान करवारकर आरती उतारती है भाई की लम्बी उमर की कामना करती है। भाई भी बहन को यथाशक्ति वस्त्र आभूषण मीठाई एवं राशी देकर बहन का मान बढाते हैं। यह स्वस्थ परम्परा है जो हमारे परिवारों को समृद्ध बनाती है। और बहन बेटियों दोनों कुलों ससुराल और मायका को प्रकाशित और प्रफुल्लित करती हैं।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका

श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

की अमृतमयी वाणी में

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित

यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश

कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

व्यक्ति निर्माण के उपयुक्त माध्यम

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा0 अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

ऋषियों ने अत्यधिक गम्भीरतापूर्वक विचार कर वह उपाय भी खोज निकाला था जिसके आधार पर मानवीय मन को एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर निर्मल सन्तुलित एवं सुस्कृंत बनाया जा सके। इस प्रक्रिया का नाम है संस्कार पद्धति। समय-समय पर शोढ़ष संस्कारों का प्रयोग उपचार मनुष्य के ऊपर इस प्रकार किया जा सकता है कि उसके मनोविकारों का शमन हो और उन सत्प्रवृत्तियों का विकास हो जिनसे व्यक्तित्व प्रखर बनता है। जीवन को सतत् काम आने वाली सत्प्रवृतियों का बीजारोपण भी इन संस्कारों के समय ही होता है। यदि किसी बालक के सभी संस्कार ठीक रीति से समुचित वातावरण में किये जायें तो उसका ऐसा सुविकसित व्यक्तित्व से सम्पन्न होना पूर्णतया सम्भव है, जिससे उसका जीवन आनन्दमय, प्रतिभा सम्पन्न, प्रगतितशील एवं सफल बन सके। संस्कार पद्धति को एक प्रकार से मनोविकारों के निराकरण की विज्ञान सम्मत चिकित्सा प्रणाली कहा जा सकता है। उसे व्यक्तित्वों को प्रतिभा सम्पन्न बनाने की सृजनात्मक प्रक्रिया कहा जाए तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी। यज्ञ चिकित्सा पद्धति से उन रोगों का निराकरण हो सकना सम्भव है, जो शरीर चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से ससाध्य घोषित किये जा चुके हैं। इसी प्रकार उससे मनोविकार का शमन भी होता है। ब्राह्मण के छः कार्य बतायें हैं- 1. यज्ञ करना 2. यज्ञ कराना 3. विद्या पढना 4. विद्या पढाना 5. दान देना 6. दान दिलाना। इन छः को तीन जोडे ही समझना चाहिए- यज्ञ, शिक्षण और दान। इन तीन प्रयोजनों में ही ब्राह्मण को लगा रहना चाहिए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उसका एक तिहाई जीवन यज्ञ प्रयोजन में संलग्न रहे। स्पष्ट है कि यज्ञ प्रक्रिया किसी व्यक्ति के साथ जितनी अधिक जुडी रहेगी वह उतना ही अधिक मानसिक दृष्टि से निर्मल बनेगा। ब्राह्मण इसी आधार पर अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक पवित्र होते थे, यज्ञानुष्ठानों से उनका अन्तःकरण अधिकाधिक पवित्र होता चला जाता था और वे इस पृथ्वी के मूर्तिमान देवता भूसुर कहलाते थे। यज्ञानुष्ठानों को छोड देने के कारण आज ब्राह्मण समाज अपनी इस प्रतिभा एवं विशेषता को ही खो बैठा। यह यज्ञानुष्ठान ब्राह्मण जाति के लिए ही आवश्यक नहीं होते वरन् उन सभी के लिए श्रेयस्कर हैं जो अपना मानसिक स्तर उत्कृष्ट बनाना चाहते हैं, देवत्व की भूमिका में विकसित होना चाहते हैं। संस्कारों के साथ जो धर्मानुष्ठान जुडा है वह उसी प्रयोजन की पूर्ति करता है। नित्य न सही जीवन का मोड उपस्थित करने वाले महत्वपूर्ण अवसरों पर भी यदि वे यज्ञानुष्ठानों संस्कार प्रयोजन के लिए किये जाएं तो उतने से भी आशाजनक परिणाम होता है। व्यक्ति निर्माण के प्रयोजन की पूर्ति में भारी सहायताएं मिला करती हैं।

व्यक्ति का निर्माण तीन हाथों में होता है- माता, पिता और आचार्य। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है-

मातृमान् पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद

माता वाला होकर, पिता वाला होकर, आचार्य वाला होकर मनुष्य ज्ञानवान बनता है तथा समस्त आवश्यक कर्तव्यों और सुखों का लाभ लेता है। माता द्वारा धार्मिक निर्माण होता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृमान

प्रशस्त और धार्मिक माता जिसकी हो वह माता वाला है। जो गर्भावस्था से लेकर पूर्ण युवावस्था पर्यन्त धार्मिकता और सुशीलता का उपदेश देती रहे। यहां महर्षि के शब्दों से स्पष्ट है कि माता के द्वारा धार्मिक निर्माण करने का, माता द्वारा निदेशात्मक निर्माण भी होता है। किसी भी कर्तव्य को करने के लिए निदेश अर्थात् सहारा माता की ओर से मिलता है। खडे होने चलने आदि का सहारा मिलता है।..................................... (शेष पेज 07 पर देखें)

पृष्ठ 06 का शेष....

व्यक्ति निर्माण के उपयुक्त माध्यम (लेखक : डा0 अर्चना प्रिय आर्या)

माता के जैसे गर्भ के विचार होते हैं वैसे ही बालक के ऊपर संस्कार पडते हैं। वीर अभिमन्यु गर्भगत संस्कारों का फल था। विदेश में किसी गृहस्थ के यहां एक बालक उत्पन्न हुआ। उसका पिता उसे गोद में लेना चाहता है, पिता की गोद में आकर वह रोता है। छः मास या वर्ष के पीछे लेता है तब भी वह रोता है, नहीं आना चाहता है। पता चला कि जब वह बच्चा माता की गोद में था तब माता उसके पिता से चिढा करती थी। चिडचिडाहट का स्वभाव उसके अन्दर आ गया। इसलिए वह भी पिता से चिढता है। शरीर पर भी प्रभाव माता का पडा करता है। एक अंग्रेज के यहां एक उत्पन्न हुआ और वह काला बच्चा था। अंग्रेज बाहर गया हुआ था। जब वह घर आया और अपनी देवी के हाथों में काला बच्चा देखा तो अपनी देवी से पूछा कि यह किसका बच्चा है? आपका। मैं गोरा तू भी गोरी यह काला बच्चा कैसे? यह चर्चा उसने अपने मित्रों में की। एक मित्र डाक्टर थे। डाक्टर मित्र ने कहा हम आपके घर का निरीक्षण करेगें, तब कह सकेगें। डाक्टर ने जैसे ही उसके घर में प्रवेश किया उसने देखा कि सामने एक काले हब्शी का चित्र लगा हुआ है। डाक्टर बोल उठा गर्भवती आपकी पत्नी की दृष्टि इस हब्शी के चित्र पर पडती थी इसलिए यह काला बच्चा उत्पन्न हुआ। पिता द्वारा बालक का निर्माण सामाजिक अथवा सभ्य बनाने में होता है। वेद में कहा है-

सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्

सभा में बैठने उठने योग्य तथा समाज का हित करने वाला पुत्र होना चाहिए तथा पिता द्वारा बालक का निर्माण आदेशात्मक होता है। पिता किसी बात के लिए आदेश देता है ऐसा करो, ऐसा न करो अपने आदेशानुसार चलाता है, आज्ञाकारी बनाता है, उसे कई प्रकार के शिष्टाचार सिखाता है। जैसे शास्त्रों में कहा गया है-

न पाणिपाद चपलो भवेन्न वागड़ चपलो भवेत्।
न नेत्र चपला भवदिति शिष्टस्य गोचरः।।

हाथ पैरों का चपल बालक को नहीं होना चाहिए। हाथों से अन्यथा चेष्टाएं, तिनके तोडना, दरी आदि वस्तुओं के तन्तुओं को निकालना, पैरों को अन्यथा हिलाना, वाणी से अन्यथा बोलते रहना, सिर आदि अंगों को अन्यथा चलाना, नेत्रों को मटकाना आदि चेष्टाएं न करना चाहिए यह शिष्ट का मार्ग है।

शिष्टाः खलु विगत-मत्सराः कुम्भीधान्या आलोलुपा दम्भदर्य विमोहरहिताः

शिष्ट लोग ईर्ष्या रहित कोठी में धान्य के समान गम्भीर, लोलुपता रहित, छल, गर्व, मोह से रहित होते हैं। तथा स्वास्थ सम्बन्धी शिष्टाचार भी सीखना होता है। जैसे टूटी हुई खाट पर न सोना, खाट को भीती के साथ लगाकर न सोना, किसी जन्तु के चढ जाने का भय रहता है। सूर्य को उदय होते हुए और अस्त होते हुए न देखना इससे दृष्टि भंग हो जाती है। मध्याहगत सूर्य को न देखना, सूर्य ग्रहण के समय खुली आंखों से सूर्य को न देखना, सामाजिक तथा राष्ट्रीय शिष्टाचार सार्वजनिक मार्ग पर मल-मूत्र न त्यागना, जलाशय में भी मल न त्यागना, पके धान के खेत में शौच न जाना क्योंकि वह अन्न में मिल जायेगा। खाद का वहां कोई प्रश्न नहीं है। बडों को मान की दृष्टि से और छोटों का प्रेम की दृष्टि से देखना। सबके प्रति यथायोग्य व्यवहार करना शिष्टाचार कहाता है जो पिता के द्वारा सिखाने योग्य है।

दीपावली, गोवर्धन एवं भैया दूज
की हार्दिक शुभकामनाएं
वीरेन्द्र कुमार गौतम (प्रमुख उद्योगपति, भावनगर, गुजरात)

कवि की कलम से

दीपों का त्यौहार है...

रचियता :
कवि रोहित आर्य
आर्य वीर दल (दिल्ली)

दीपावली नाम बतलाता, दीपों का त्यौहार है,
दीपक से रोशन हो जाता, सारा घर और द्वार है।
तेल और घी के दीपक से, कीटाणु मर जाते हैं,
जिसके कारण नये-नये न, रोग पनपने पाते हैं।।

नया अन्न घर पर आता है, उसकी खुशी मनाते हैं,
करके यज्ञों का आयोजन, वातावरण बचाते हैं।
लाखों वर्ष पुरानी अपने, भारत की यह नीति है,
अपने देश की चिंता हमको, उससे बेहद प्रीति है।।

दीवाली का पर्व मनाओ, खूब मिठाई खाओ तुम,
अपने देश की शुद्धि खातिर, घर-घर यज्ञ रचाओ तुम।
खुद भी खूब मिठाई खाओ, और दूसरों को बांटो,
दीवाली के इस अवसर पर, औरों के दुरूख को काटो।।

दीपावली नाम है इसका, नहीं पटाखों को फूँको,
करके पर्यावरण प्रदूषित, निज भारत में न थूको।
आतिशबाजी करो न जिससे, वातावरण प्रदूषित हो,
वायु में दुर्गंध न फैले, और न पानी दूषित हो।।

नहीं किसी के घर में सुन लो, आग लगे बारूद से,
सब अपना त्यौहार मनाओ, खाकर घी और दूध से।
सुनो तुम्हारी मौजों के, चक्कर में कोई ना रोए,
कोई अपने हाथ पैर और, नाक, कान को ना खोए।।

कोई भी न अंग-भंग हो, न जीवन को खोए जी,
दो पल की खुशियों की खातिर,जीवन भर न रोये जी।
सुनो किसी रोगी व्यक्ति को, नहीं परेशानी होवे,
आतिशबाजी के चक्कर में, कोई जीवन न खोवे।।

कोई भी खिलता गुलाब न, बारूदों से मुरझाए,
नहीं किसी के घर का दीपक, दीवाली पै बुझ जाए।
आग लगाकर बारूदों में, धन को नहीं जलाना तुम,
जिससे प्यारा देश सुखी हो, ऐसे पर्व मनाना तुम।।

ऐसे करना काम कि जिससे, भारत में खुशियाँ आयें,
किसी बिचारे निर्धन के भी, घर के दीपक जल जायें।
यह खुशियों की बेला है मैं, नहीं किसी को रोकूँगा,
लेकिन भारतीय होने के, कारण तुमको टोकूँगा।।

अगर पटाखे आप जलाओ, इतना ध्यान जरूर करो,
जो दुर्गंध आपने की है, हवन रचाकर दूर करो।
भारत माँ की रक्षा करने, दे देते जो जान को,
दीप जलाना आप सभी, उस सैनिक के सम्मान को।।

अपनी प्यारी भारत माँ का, हमको रखना मान है,
इसको गंदा नहीं करें हम, यह उसका सम्मान है।
खुशी-खुशी सब लोग मनाना, दीपों के त्यौहार को,
धन-दौलत से पूरित कर दे, ईश तुम्हारे द्वार को।।

हम सब लोगों के जीवन में, धन-दौलत का वास हो,
खूब बढ़े आरोग्य और, हर बीमारी का नाश हो।
कम से कम बारूद जलाकर, रोको तुम बीमारी को,
हे भारत माता के बेटो!, समझो जिम्मेदारी को।।

दीपावली मनाने के हित, वैदिक पथ अपनाना है,
''रोहित'' पर्यावरण बचाकर, के त्यौहार मनाना है।।

''संस्कार जागृति मिशन'' की ओर से को ''भैया दूज'' की हार्दिक शुभकामनाएं

''ईश्वर को हमारे माल व माला की जरूरत नहीं''

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

आज दुनियां इसलिए दु:खी, परेशान और तनाव से ग्रस्त है क्योंकि उसने सच्चे परमात्मा को छोड़ दिया है और नकली भगवानों और देवी-देवताओं के चक्कर में पड़ गई है। असली परमात्मा तो हमारे अंदर बैठा है और हम उसे बाहर खोज रहे हैं। यहीं भूल हो रही है। ईश्वर को हमारे माल और माला की जरूरत नहीं है। वह चरण वंदना से नहीं, कर्म वंदना से प्रसन्न होंगे। ईश्वर को वाणी और धन से राजी करना चाहते हैं, यह भूल है। जो व्यक्ति अपने अंदर सदा प्रभु का अनुभव करता है और सभी जीवों में उसी का निवास मानता है वही सच्चे अर्थ में प्रभु का सच्चा ज्ञाता और ज्ञानी है। देवता उसे कहते हैं जो देवे- जैसे वायु देवता (जो हमें प्राण देता है लेता कुछ नहीं), अग्नि देवता (जो हमें ऊष्णता देता है लेता कुछ नहीं), पृथ्वी देवता (जो हमें बसने के लिए स्थान व अन्न देता है लेता कुछ नहीं)। वे देवता कैसे जो हमारे से ही लेवें- कभी 11 रूपये, कभी 51 रूपये का प्रसाद, कभी सवामणि का प्रसाद, कभी लंगोटा आदि- ये देवता नहीं, लेवता हैं। मेरे देश में रिश्वत की नींव यहीं से पड़ी है। जब ईश्वर ही बिना रिश्वत के काम नहीं करता तो बन्दो का क्या दोष? हमारे यहां बचपन से ही भगवान को रिश्वत देने के संस्कार डाले जाते हैं, जिसने आज बड़ा भयंकर रूप ले लिया है। जब तक भगवान को रिश्वत देना बंद नहीं करेंगे तब तक बंदे भी रिश्वत लेना बंद नहीं करेंगे। हमारे यह पुजाये के व्यवसाई टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रम्ह का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेलरूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने का स्थान नहीं छोड़ा है। हमारे यहां महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों-युगों तक मनुपुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है- पर इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खड़े कर दिए हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम व्यक्तित्व पर इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें- रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख-सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किए हैं किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र भी योगदान नहीं है किंतु पाखंडी मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कालांतर में धीरे-धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु-पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में ये देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाष्ठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि मिट्टी के ढेले पर कलावा बांध कर उसे सीधे-सीधे गणेश भगवान बना दिया गया। इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांग कर खाने वालों की फौज खड़ी होती चली गई।ऋषि ने ''एकोब्रह्म द्वितीयोनास्ति'' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहुदेवतावाद का अंतहीन सिलसिला खड़ा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकड़ियों के टुकड़ों पर तमाम तरह के देवी-देवताओं की विचित्र विचित्र शक्लें उतारकर देवालयम, मंदिरों और घरों में खड़ी कर दी। यह देवी-देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके बल्कि स्वयं इस समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किए हुए देवता जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बना कर बैठा दिया। ऐसी व्यवस्था भूमंडल पर अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ेगी। वैसे सृष्टि नियम के विरुद्ध बातें सभी मतों में हैं जैसे- मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगंबर मोहम्मद साहब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकड़े कर दिए।...................................(शेष पेज 10 पर देखें)

पृष्ठ 09 का शेष.... ''ईश्वर को हमारे माल व माला की जरूरत नहीं'' (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कार आते हैं जैसे- हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, कुंती के कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया आदि। भूत, प्रेत, गंडा, डोरी, श्राद्ध तर्पण, ज्योतिष ग्रहों का नाराज होना या खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना, अंधविश्वास व पाखंड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरुद्ध हैं। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर वह लाभदायक होगा। वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रम्हयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ कहते हैं), शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए यम-नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना वेदों सहित सभी आर्ष ग्रंथों का पढ़ना और उसके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत हैं वैदिक धर्म के। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र, स्वस्थ्य रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पंथों को छोड़कर वैदिक धर्म को अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाइयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

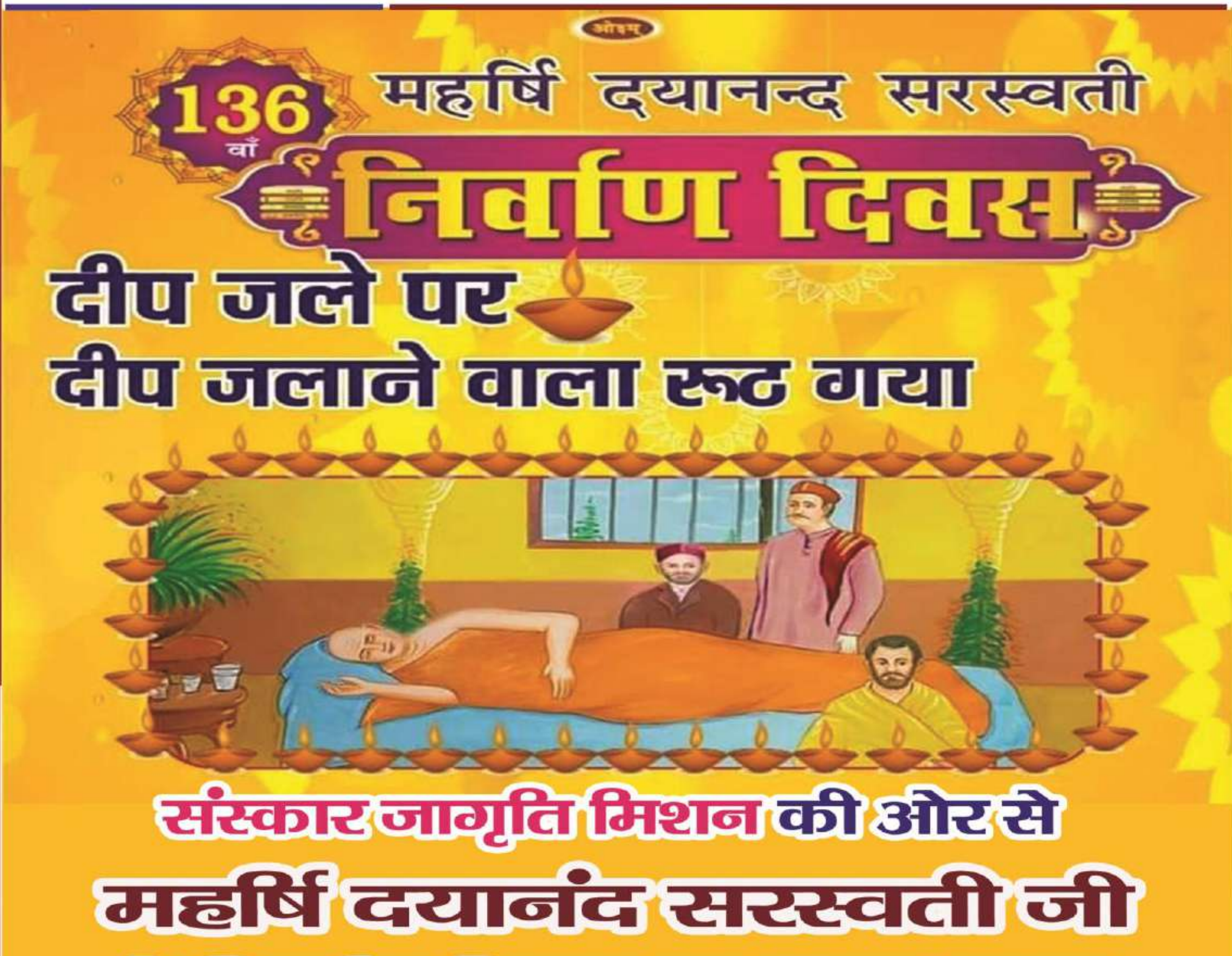

प्रेरक प्रसंग

मां की सीख ने बनाया महापुरूष

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

ईश्वरचंद विद्यासागर के बचपन की यह एक सच्ची घटना है। एक सवेरे उनके घर के द्वार पर एक भिखारी आया। उसको हाथ फैलाये देख उनके मन में करुणा उमड़ी। वे तुरंत घर के अंदर गए और उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वे उस भिखारी को कुछ दे दें। माँ के पास उस समय कुछ भी नहीं था सिवाय उनके कंगन के। उन्होंने अपना कंगन उतारकर ईश्वरचंद विद्यासागर के हाथ में रख दिया और कहा कि जिस दिन तुम बड़े हो जाओगे, उस दिन मेरे लिए दूसरा बनवा देना अभी इसे बेचकर जरूरतमंदों की सहायता कर दो। बड़े होने पर ईश्वरचंद विद्यासागर ने अपनी पहली कमाई से अपनी माँ के लिए सोने के कंगन बनवाकर ले गए और उन्होंने माँ से कहा कि माँ! आज मैंने बचपन का तुम्हारा कर्ज उतार दिया। उनकी माँ ने कहा कि बेटे! मेरा कर्ज तो उस दिन उतर पायेगा, जिस दिन किसी और जरूरतमंद के लिए मुझे ये कंगन दोबारा नहीं उतारने होंगे। माँ की सीख ईश्वरचंद विद्यासागर के दिल को छू गयीं और उन्होंने प्रण किया कि वे अपना जीवन गरीब-दुखियों की सेवा करने और उनके कष्ट हरने में व्यतीत करेंगे और उन्होंने अपना सारा जीवन ऐसा ही किया। महापुरूषों के जीवन कभी भी एक दिन में तैयार नहीं होते। अपना व्यक्तित्व गढ़ने के लिए वे कई कष्ट और कठिनाइयों के दौर से गुजरते हैं और हर महापुरूष का जीवन कहीं न कहीं अपनी माँ की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित रहता है।

संस्कार जागृति मिशन

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत॥

सभी देशवासियों को
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनायें

वंदना प्रिय आर्य
(उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

सम्पर्क सूत्र
09719910557

डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
एम.ए., पी.एच.डी. (संस्कृत)
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

संस्कार जागृति मिशन से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कारित करें।

संस्कार जागृति मिशन
एक कदम संस्कारों की ओर
कार्यालय : 52, ताराधाम कॉलोनी, पुष्पांजलि द्वारिका के पास, पोस्ट-अडूकी, मथुरा (उ.प्र.) -281006

स्वास्थ्य चर्चा

डायबिटीज के घरेलू उपचार

नीति प्रिय आर्य

आयुर्वेद में डायबीटीज को मधुमेह के नाम से जाना जाता है। यह दुनिया में सबसे तेज बढ़ने वाले रोगों में से एक है। इस बीमारी से आज देश और दुनिया में करोडों लोग पीड़ित हैं। आजकल युवा भी इसकी चपेट में आते जा रहे हैं, जिसकी बड़ी वजह गलत खानपान व लाइफस्टाइल है। डायबिटीज में ब्लड शुगर का लेवल बहुत बढ़ जाता है, जिससे शरीर की इंसुलिन उत्पादन क्षमता प्रभावित होने लगती है। कई बार ऐसा भी होता है कि शरीर सक्रिय रूप से इंसुलिन का इस्तेमाल ही नहीं कर पाता हैं। इस बीमारी के कारण व्यक्ति को अपना शुगर लेवल लगातार चेक करते रहने के साथ ही उसे कंट्रोल में रखना पड़ता है। डायबिटीज कंट्रोल करने के लिए सबसे जरूरी है कि आप अपने खानपान पर विशेष ध्यान दें और परहेज करें। इसके अलावा कई ऐसे घरेलू उपाय हैं जिनसे आप डायबिटीज कंट्रोल करके एक सामान्य जीवन जी सकते हैं। आइये जानते हैं डायबिटीज कुछ घरेलू उपचार-

डायबिटीज के दस घरेलू उपचार :-

1. गेहूं के छोटे-छोटे पौधों का रस असाध्य बीमारियों को भी मिटा सकता है। इसके रस को ग्रीन ब्लड के नाम से भी जाना जाता है। गेहूं के जवारे का आधा कप ताजा रस रोज सुबह-शाम पीने से डायबिटीज में लाभ होता है।
2. तुलसी के पत्तों में एन्टीऑक्सीडेंट तत्व मौजूद होते हैं। डायाबीटीज के स्तर को कम करने के लिए रोज दो से तीन तुलसी के पत्ते खाली पेट लें। आप इसका जूस भी ले सकते हैं।
3. प्रतिदिन सुबह खाली पेट अलसी का चूर्ण गरम पानी के साथ लेने से डायबीटीज को कम किया जा सकता है। अलसी में फाइबर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जिसके कारण यह फैट और शुगर का उचित अवशोषण करने में सहायक होता है। अलसी के बीज डाइबीटीज के मरीज की भोजन के बाद की शुगर को लगभग 28 प्रतिशत तक कम कर देते हैं।
4. गर्म पानी में ग्रीन टी का एक बैग 2-3 मिनट तक डुबोकर रखें। फिर बैग निकाल दें और इस चाय का एक कप सुबह या भोजन के पहले सेवन करें।
5. शलजम के प्रयोग से भी ब्लड शुगर कम होती है। इसके अलावा डायबीटीज के मरीज को तरोई, लौकी, परवल, पालक, पपीता आदि का प्रयोग भी ज्यादा करना चाहिए।
6. टमाटर, खीरा और करेले का मिक्स जूस सुबह-सुबह खाली पेट पीने से भी डायबीटीज में बहुत फायदा होता है।
7. डायबीटीज के मरीजों के लिए सौंफ बहुत फायदेमंद होती है। सौंफ खाने से डायबीटीज नियंत्रण में रहता है। नियमित तौर पर खाने के बाद सौंफ खानी चाहिए।
8. 10 मिलीग्राम आंवले के जूस को 2 ग्राम हल्दी के पाउडर में मिलाकर सेवन सरने से डायबीटीज पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इस घोल को दिन में दो बार लीजिए।
9. डायबीटीज के रोगियों को काले नमक के साथ जामुन खाना चाहिए। इससे खून में शुगर की मात्रा नियंत्रित होती है।
10. करेले का रस शुगर की मात्रा कम करता है। डायबीटीज पर नियंत्रण पाने के लिए करेले का रस नियमित तौर पर पीना चाहिए।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

आर्य समाज अकोस के प्रधान व समाजसेवी श्री गुलाब सिंह आर्य जी निधन के बाद उनके पैतृक गांव नगला संज्ञा में यज्ञ कराते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी। मंचस्थ हैं वेद मंदिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी महाराज, स्वामी यज्ञमुनि जी, आर्य उप प्रतिनिधि सभा मथुरा के प्रधान विपिन बिहारी जी आदि।

संस्कार जागृति मिशन के ऊंचागांव (हाथरस) स्थित कार्यालय पर पहुंची भाजपा नेत्री व सादाबाद विस से प्रत्याशी रहीं श्रीमती प्रीति चौधरी जी को स्मृति चिन्ह भेंट करती मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, सचिव विवेक प्रिय आर्य जी, श्रीमती सरोज रानी आर्य जी व श्रीमती वीरमति देवी आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन के 'हर घर यज्ञ अनुष्ठान' के अंतर्गत मथुरा की चंदनवन कॉलोनी में श्री केशव सिंह सूबेदार जी के यहां यज्ञ कराते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व प्रचारक लाल सिंह आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी के जन्मदिवस के असवर पर ऊंचागांव स्थित आवास पर यज्ञ कराते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी। यज्ञ में सम्मलित अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी लखम सिंह आर्य जी, प्रियव्रत ओम आर्य जी व यज्ञ प्रेमीबंधु।

मथुरा के नगला दघैंटा में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रवचन करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

एक कार्यक्रम के दौरान फतेहपुर सीकरी की पूर्व सासंद श्रीमती सीमा उपाध्याय जी के साथ मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

भरतपुर में आयोजित आर्य महासम्मेल में विचार व्यक्त करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष श्रद्धेया डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी। मंचस्थ हैं मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

02 सितम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटीं डा. अर्चना प्रिय

विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने को चला रहीं है अभियान, देश के प्रत्येक कोने तक पहुंचा रहीं है अपनी अवाज

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनतरत महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बढ़ रहे नशाखोरी एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने के लिए एक अभियान चला रही है। आने वाले पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटी अर्चना इस बात से चिंतित है कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है।

उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा। उनके द्वारा बुलंद आवाज में कही गयी बात व मधुर स्वर में गाये गये गीतों से लोगों तक उनकी बात पहुंचती है। डा. अर्चना प्रिय आर्य ने समाज सुधार व जन जागरण के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा मुकाम हासिल किया है। डा. अर्चना बताती हैं कि लगभग 25 वर्ष पूर्व मेरे पैतृक गांव ऊंचागांव (हाथरस) में आर्य समाज द्वारा एक जालसा किया गया था जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। इसी संकल्प के साथ वह अपनी छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से भटक रहे युवाओं को पुनः संस्कारित करने में जुट गई और संस्कार जागृति मिशन की स्थापना कर अपने संकल्प की पूर्ति में लग गयीं।

अब गांव ही नहीं पूरे देश में जहां भी जाती है, वहां की लड़कियों की वह आइकॉन बन गई है। अब अपनी बेटियों को समाज सुधार के क्षेत्र में भेजने पर समाज आंख तरेर कर नहीं देखता। यह कोई नहीं कहता कि गांव-गांव घूमती है। समाज व गांव के जो लोग आंखें तरेरा करते थे आज वही लोग अपनी इस बेटी की उपलब्धि गिनाते फिरते है।

छोटी सी बात — मथुरा । बुधवार । 02 सितम्बर 2019

विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने को अभियान

मथुरा (छोटी सी बात)। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनतरत महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रेरित डा. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा समाज सुधार, नारी जागरण व उत्थान, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा के साथ युवाओं में तेजी से बढ़ रहे नशाखोरी एवं विलुप्त होते जा रहे संस्कारों को पुनःस्थापित करने के लिए एक अभियान चला रही हैं। आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में जुटी अर्चना इस बात से चिंतित हैं कि नई पीढ़ी में भटकाव आ गया है। उनका दावा है कि उनके द्वारा उठाये गये इस कदम से बदलाव अवश्य आयेगा।

उनके द्वारा बुलंद आवाज में कही गयी बात व मधुर स्वर में गाये गये गीतों से लोगों तक उनकी बात पहुंचती है। डा. अर्चना प्रिय आर्य ने समाज सुधार व जन जागरण के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा मुकाम हांसिल किया है। डॉ. अर्चना बताती हैं कि लगभग 25 वर्ष पूर्व मेरे पैतृक गांव ऊंचागांव (हाथरस) में आर्य समाज द्वारा एक जलसा किया गया था, जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी इस समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। इसी संकल्प के साथ वह अपनी छोटी बहिन वंदना प्रिय आर्य के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से भटक रहे युवाओं को पुनः संस्कारित करने में जुट गई और संस्कार जागृति मिशन की स्थापना कर अपने संकल्प की पूर्ति में लग गयीं। डॉ. अर्चना ने जब से इस क्षेत्र में कदम रखे हैं, तब से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज देश का कोई कोना ऐसा नहीं जहां तक वह अपने अभियान संस्कार जागृति मिशन की आवाज नहीं पहुंचा सकी हों। पर, यहां तक पहुंचने के लिए समाज सुधार के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने, युवाओं खासकर लड़कियों में इस क्षेत्र में आगे आने के लिए हौसला देने का यह सफर उनके और परिवार के लिए आसान नहीं रहा है।

यह सच है कि जब उनके पिता आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान अपनी दोनों बेटियों को जन जागरण के इस क्षेत्र में आगे लाये तो गांव व समाज के कुछ तथाकथित लोगों को यह रास नहीं आया। लेकिन पिता ने इसकी परवाह न करते हुए, जब अपनी दोनों बेटियों को ऊंची सोच, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ आगे बढ़ाया तो आज वह जिस मुकाम पर हैं, शायद वह बिना किसी कठोर तप के पाना असंभव है। अब गांव ही नहीं पूरे देश में जहां भी जाती हैं, वहां की लड़कियों की वह आइकोन बन गई हैं। अब अपनी बेटियों को समाज सुधार के क्षेत्र में भेजने पर समाज आंख तरेर कर नहीं देखता। यह कोई नहीं कहता कि गांव-गांव घूमती हैं।

27 सितम्बर 2019 — ब्रज गरिमा

यज्ञादि से बच्चों को करें संस्कारित : सत्यप्रिय

चन्दनवन में यज्ञ कराते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य।

मथुरा, संस्कार जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे अभियान 'हर घर यज्ञ अनुष्ठान' अंतर्गत चंदनवन फेस-2 में मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान कराया गया, जिसमें लोगों द्वारा आहुति दी गई। इस अवसर आचार्य आर्य ने कहा कि आज समाज हमारे ऋषियों की परम्पराओं को भूलता जा रहा है और पाश्चात्य की ओर बढ़ रहा रहा है। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ को छोड़कर बच्चों के जन्मदिन केक काट कर मनाये जाने लगे हैं, जोकि दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अभिभावक को बच्चे का जन्मदिन यज्ञ कर मनाना चाहिए, ताकि बच्चे संस्कारित हों और अपनी संस्कृति के बारे में जानें। मिशन प्रचारक लाल सिंह आर्य ने भी भजन के माध्यम से यज्ञ की महिमा बताई। आयोजक केशव सिंह सूबेदार ने सभी का आभार व्यक्त किया। यज्ञ में प्रमुख रूप से मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, राजेन्द्र सिंह, सावित्री देवी, पूनम कुमारी, शोभा सिंह, दृष्टि सिंह आदि उपस्थित रहे।

27 सितम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

यज्ञादि से बच्चों को करें संस्कारितः सत्यप्रिय

संस्कार जागृति मिशन ने चन्दनवन में किया यज्ञ

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे अभियान 'हर घर यज्ञ अनुष्ठान' अंतर्गत चंदनवन फेस 2 में मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान कराया गया जिसमें लोगों द्वारा आहुति दी गई। इस अवसर आचार्य श्री आर्य ने कहा कि आज समाज हमारे ऋषियों की परम्पराओं को भूलता जा रहा है और पश्चात की ओर बढ़ रहा रहा है। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ को छोड़कर बच्चों के जन्मदिन केक काटकर मनाये जाने लगे हैं जोकि दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अभिभावक को बच्चे का जन्मदिन यज्ञ कर मनाना चाहिए ताकि बच्चे संस्कारित हो और अपनी संस्कृति के बारे में जानें। मिशन प्रचारक लाल सिंह आर्य ने भी भजन के माध्यम से यज्ञ की महिमा बताई। आयोजक केशव सिंह सूबेदार ने सभी का आभार व्यक्त किया। यज्ञ में प्रमुख रूप से मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, राजेन्द्र सिंह, सावित्री देवी, पूनम कुमारी, शोभा सिंह, दृष्टि सिंह आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान — आगरा • शनिवार • 28 सितम्बर 2019

यज्ञ से बच्चों को संस्कारित करें

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन सदस्यों ने चंदनवन फेस-2 में मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि विधान से

23 सितम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

संस्कारित समाज ही देता है राष्ट्र को सही दिशाः अर्चना

संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय पर भाजपा नेत्री का स्वागत

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन के ऊँचा गाँव स्थित कार्यालय आगमन पर भाजपा नेत्री व सादाबाद विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी रहीं प्रीति चौधरी का स्वागत किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य व सचिव विवेक प्रिय आर्य ने श्रीमती चौधरी को स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर उन्होंने मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे जानकारी अर्जित की और कहा कि आज समाज में जो विकृति आयी है उस पर निजात केवल वेद के रास्ते पर ही आकर पाया जा सकता है। संस्कारित समाज ही राष्ट्र को सही दिशा देता है। हमारे परिवार संस्कारों से भटक रहे हैं उन परिवारों में पुनः संस्कारों को स्थापित करने के लिए मिशन द्वारा चलाया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है। अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि माता पिता व अभिभावकों को संस्कारों के प्रति सचेत होना होगा क्योंकि जब तक परिवारों का वातावरण संस्कारमय नहीं होगा तब तक बच्चों को संस्कारित करना असंभव है। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा संचालन प्रियव्रत ओम आर्य ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, वीरमति देवीए नीति प्रिय आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सुषमा आर्य, प्रमोद आर्य, उत्कर्ष प्रताप आर्य, देवांश आदि थे।

23 सितम्बर 2019 — ब्रज गरिमा

संस्कार जागृति मिशन द्वारा भाजपा नेत्री का स्वागत

भाजपा नेत्री प्रीति चौधरी को स्मृति चिन्ह भेंट करती संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य व सचिव विवेक प्रिय आर्य आदि

मथुरा, संस्कार जागृति मिशन के ऊँचा गाँव स्थित कार्यालय आगमन पर भाजपा नेत्री व सादाबाद विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी रही प्रीति चौधरी का स्वागत किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य व सचिव विवेक प्रिय आर्य ने श्रीमती चौधरी को स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर उन्होंने मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे जानकारी अर्जित की और कहा कि आज समाज में जो विकृति आयी है उस पर निजात केवल वेद के रास्ते पर ही आकर पाया जा सकता है। संस्कारित समाज ही राष्ट्र को सही दिशा देता है। हमारे परिवार संस्कारों से भटक रहे हैं, उन परिवारों में पुनः संस्कारों को स्थापित करने के लिए मिशन द्वारा चलाया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा इस कार्य में आधुनिक तकनीकी का सहारा लेकर भी मिशन हमारे परिवारों तक पहुंच रहा है, ये बहुत ही खुशी की बात है। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि माता पिता व अभिभावकों को संस्कारों के प्रति सचेत होना होगा, क्योंकि जब तक परिवारों का वातावरण संस्कारमय नहीं होगा तब तक बच्चों को संस्कारित करना असंभव है। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा संचालन प्रियव्रत ओम आर्य ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, वीरमति देवी, नीति प्रिय आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सुषमा आर्य, प्रमोद आर्य, उत्कर्ष प्रताप आर्य, देवांश आदि थे।

अमर उजाला — आगरा | बुधवार, 11 सितंबर 2019

संस्कार जागृति मिशन ने किया यज्ञ

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ सर्व कल्याण की कामना को लेकर किया जाता है। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखन सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परंपरा है। प्रभारी प्रियव्रत आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य, सरोज रानी आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सुषमा सिंह आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह, देवांश, रामप्रकाश आर्य, राजवीर सिंह आर्य आदि थे।

छोटी सी बात — 27 सितम्बर 2019

यज्ञ से बच्चों को करें संस्कारित

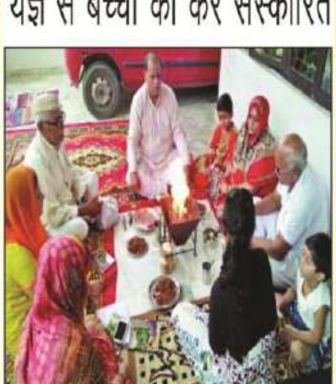

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे अभियान हर घर यज्ञ अनुष्ठान के अंतर्गत चंदनवन फेस-2 में मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान कराया गया, जिसमें लोगों द्वारा आहुति दी गई। कहा कि आज समाज हमारे ऋषियों की परम्पराओं को भूलता जा रहा है और पाश्चात्य की ओर बढ़ रहा रहा है। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ को छोड़कर बच्चों के जन्मदिन केक काटकर मनाये जाने लगे हैं जो दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अभिभावक को बच्चे का जन्मदिन यज्ञ कर मनाना चाहिए, ताकि बच्चे संस्कारित हो और अपनी संस्कृति के बारे में जानें। मिशन प्रचारक लाल सिंह आर्य ने भी भजन के माध्यम से यज्ञ की महिमा बताई। आयोजक केशव सिंह सूबेदार ने सभी का आभार व्यक्त किया। यज्ञ में प्रमुख रूप से मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, राजेन्द्र सिंह, सावित्री देवी, पूनम कुमारी, शोभा सिंह, सृष्टि सिंह आदि उपस्थित रहे।

छोटी सी बात — 25 सितम्बर 2019

अकोस में वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न

मथुरा। बल्देव क्षेत्र के नगला संज्ञा में आर्य समाज अकोस के प्रधान गुलाब सिंह आर्य के निधन पर शांति यज्ञ कर उन्हें

श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया और कहा उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होती है। वेद मंदिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज ने कहा कि पुत्र का अर्थ होता है जो नरक से तारता है। स्व. गुलाब सिंह पूरी जिंदगी आर्य समाज को समर्पित रहे और महर्षि दयानंद के प्रचार प्रसार के लिए दिनरात लगे रहे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को सच्चे अर्थों में अपने जीवन में जीया था। इस दौरान सीकर सांसद स्वामी सुमेधानंद महाराज, स्वामी यज्ञमुनि, आचार्य विपिन बिहारी, स्वामी विश्वानंद, संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, प्रचारक लाल सिंह आर्य, केसव सिंह आर्य तथा ग्राम पंचायत अकोस के प्रमुख नागरिकों द्वारा उनको श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। संचालन आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान ने किया तथा आचार्य धर्मवीर शास्त्री, कर्मवीर छौंकर, ओमवीर छौंकर व जगवीर छौंकर द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

ब्रज गरिमा — 25 सितम्बर 2019

वैदिक विधि विधान से यज्ञ कराया

मथुरा, बल्देव क्षेत्र के नगला संजा मे आर्य समाज अकोस के प्रधान स्व.गुलाब सिंह आर्य के निधन पर शांति यज्ञ कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर संस्कार जागृतिमिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया और कहा उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होती है। वेद मंदिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज ने कहा कि पुत्र का अर्थ होता है जो नरक से तारता है। स्व. गुलाब सिंह पूरी जिंदगी आर्य समाज को समर्पित रहे और महर्षि दयानंद के प्रचार प्रसार के लिए दिनरात लगे रहे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को सच्चे अर्थों में अपने जीवन में जीया था। इस दौरान सीकर सांसद स्वामी सुमेधानंद महाराज, स्वामी यज्ञमुनि, आचार्य विपिन बिहारी, स्वामी विश्वानंद, संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेकप्रिय आर्य, प्रचारक लाल सिंह आर्य, केसव सिंह आर्य तथा ग्रामपंचायत अकोस के प्रमुख नागरिकों द्वारा उनको श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। पूर्व केन्द्रीय मंत्री व बागपत सांसद डा.सत्यपाल सिंह ने भी अपने संदेश पत्र के द्वारा परिजनों को सांत्वना दी। संचालन आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान ने किया तथा आचार्य धर्मवीर शास्त्री, कर्मवीर छौंकर, ओमवीर छौंकर वजगवीर छौंकर द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

छोटी सी बात — मथुरा । 10 सितम्बर 2019

बच्चों के जन्मदिन पर यज्ञ करें

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया। मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, इसे प्रतिदिन घरों में करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन केक काटकर नहीं, बल्कि यज्ञ अनुष्ठान कर मनाने चाहिए। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ सर्व कल्याण की कामना को लेकर किया जाता है। इससे वातावरण शुद्ध होता है, जिससे हमें श्वसन किया शुद्ध मिलेगी। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखन सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए।

मिशन के प्रभारी प्रियव्रत आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सुषमा सिंह आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह, देवांश, रामप्रकाश आर्य, राजवीर सिंह आर्य, प्यारेलाल, महाराज सिंह आर्य, निशा आदि थे।

10 सितम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

बच्चों का केक काटकर नहीं, यज्ञ कर मनाएं जन्मदिनः डा. अर्चना

संस्कार जागृति मिशन ने किया यज्ञ का आयोजन

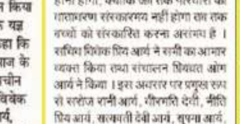

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, इसे प्रतिदिन घरों में करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन केक काटकर नहीं, बल्कि यज्ञ अनुष्ठान कर मनाने चाहिए। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ सर्व कल्याण की कामना को लेकर किया जाता है। इससे वायुमंडल शुद्ध होता है जिससे हमें श्वसन किया शुद्ध मिलेगी। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखन सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। मिशन के प्रभारी प्रियव्रत आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सुषमा सिंह आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह, देवांश, रामप्रकाश आर्य, राजवीर सिंह आर्य, प्यारेलाल, महाराज सिंह आर्य, निशा आदि थे।

हिन्दुस्तान • रविवार • 15 सितंबर 2019 •

आर्य समाजी गुलाब सिंह के निधन पर शोक

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर वरिष्ठ आर्यसमाजी व आर्य समाज अकोस के प्रधान महाशय गुलाब सिंह आर्य के निधन पर शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि उन्होंने पूरा जीवन आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार कर लोगों को जागरूक करने का कार्य किया। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि उनका क्षेत्र में महर्षि दयानंद के विचारों को घर-घर पहुंचाने में अहम योगदान है। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि उन्होंने मिशन के प्रति भी उल्लेखनीय कार्य किये थे। श्रद्धांजलि देने वालों में लाल सिंह आर्य, वंदना प्रिय आर्य, नवीन शर्मा, उत्कर्ष प्रताप सिंह, रामप्रकाश आर्य आदि थे।

अमर उजाला — सोमवार, 16 सितंबर 2019

वरिष्ठ आर्य समाजी गुलाब सिंह के निधन पर शोक

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर वरिष्ठ आर्यसमाजी व आर्य समाज अकोस के प्रधान महाशय गुलाब सिंह आर्य के निधन पर शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी गई। वक्ताओं ने गुलाब सिंह आर्य के बारे में भी अपने-अपने विचार रखे और उन्हें एक अच्छा समाजसेवी भी बताया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य, नवीन शर्मा, उत्कर्ष प्रताप सिंह थे। ब्यूरो

25 सितम्बर 2019 — राजपथ मथुरा

अकोस में वैदिक विधि विधान से हुआ यज्ञ सम्पन्न, आर्य समाजी को दी श्रद्धांजलि

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। बल्देव क्षेत्र के नगला संज्ञा में आर्य समाज अकोस के प्रधान स्व. गुलाब सिंह आर्य के निधन पर शांति यज्ञ कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया और कहा उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होती है। वेद मंदिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज ने कहा कि पुत्र का अर्थ होता है जो नरक से तारता है। स्व. गुलाब सिंह पूरी जिंदगी आर्य समाज को समर्पित रहे और महर्षि दयानंद के प्रचार प्रसार के लिए दिनरात लगे रहे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को सच्चे अर्थों में अपने जीवन में जीया था। इस दौरान सीकर सांसद स्वामी सुमेधानंद महाराज, स्वामी यज्ञमुनि, आचार्य विपिन बिहारी, स्वामी विश्वानंद, संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, प्रचारक लाल सिंह आर्य, केसव सिंह आर्य तथा ग्राम पंचायत अकोस के प्रमुख नागरिकों द्वारा उनको श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। पूर्व केन्द्रीय मंत्री व बागपत सांसद डा. सत्यपाल सिंह ने भी अपने संदेश पत्र के द्वारा परिजनों को सांत्वना दी। संचालन आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान ने किया तथा आचार्य धर्मवीर शास्त्री, कर्मवीर छौंकर, ओमवीर छौंकर व जगवीर छौंकर द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।